बाइबल में “मूल्य” का अर्थ किसी चीज़ या व्यक्ति की कीमत या महत्व से है, अक्सर धन के संदर्भ में।

1. बाइबल में “मूल्य” का अर्थ

बाइबल में यह शब्द विभिन्न संदर्भों में प्रयोग होता है ताकि यह दर्शाया जा सके कि कोई चीज़ या व्यक्ति कितना महत्वपूर्ण या मूल्यवान है। उदाहरण:

नीतिवचन 31:10
“कौन उत्तम पत्नी पा सकता है? वह रत्नों से भी अधिक
मूल्यवान है।”

यहाँ मूल्य का अर्थ रूपक के रूप में है—एक सच्ची, उत्तम पत्नी का मूल्य दुर्लभ और महंगे रत्नों से भी अधिक है। यह दिखाता है कि परमेश्वर धर्मपरायणता और सद्गुण को भौतिक संपत्ति से ऊपर रखता है।

मत्ती 27:9
“तब वह पूरा हुआ जो यरमयाह नबी ने कहा था: ‘और उन्होंने उन

तीस चांदी के सिक्के ले लिए, जिनका मूल्य उस पर रखा गया था
जिस पर इस्राएल के कुछ लोगों ने मूल्य रखा था।’”

यह अंश यहूदा इस्करियोती द्वारा यीशु की बेइमानी और पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति का वर्णन करता है। “तीस चांदी के सिक्के” यीशु के लिए तय मूल्य थे, जो दिखाता है कि दुनिया ने परमेश्वर के पुत्र को कम आंका।

लेविय्यूस 27:12
“और पुरोहित इसे अच्छा या बुरा मानकर मूल्य तय करेगा; जिस प्रकार पुरोहित इसे मापेगा, वैसा ही इसका मूल्य होगा।”

यहाँ परमेश्वर ने पुरोहितों को यह अधिकार दिया कि वे उन वस्तुओं या जानवरों का मूल्य तय करें जो यहोवा को समर्पित किए गए थे। मूल्यांकन वस्तु की स्थिति और उद्देश्य पर निर्भर था, जो यह दिखाता है कि पूजा में चीज़ों को जानबूझकर महत्व देने की आवश्यकता थी।

अन्य संदर्भ: लेविय्यूस 27:23, यॉब 18:28, प्रेरितों के काम 7:16—सभी दिखाते हैं कि चीज़ों या लोगों का मूल्य कैसे मापा

जाता था।

2. यीशु मसीह का मूल्य: क्या इसे मापा जा सकता है?

सबसे स्पष्ट उदाहरण यहूदा द्वारा यीशु का मूल्य तय करना है—तीस चांदी के सिक्के। यह राशि संयोग नहीं थी; यह निर्गमन 21:32 के अनुसार एक दास के मूल्य के बराबर थी। परमेश्वर के पुत्र को मानो मानव आँखों में बेकार समझकर बेचा गया।

इस घटना से मानव न्याय की पूरी गिरावट और मसीह के अतुलनीय मूल्य का पता चलता है। बाद में यहूदा ने सिक्के निराशा में वापस कर दिए, अपने पाप को स्वीकार किया, परंतु मोक्ष की ओर नहीं बढ़ा (मत्ती 27:3–5)। उसकी आत्महत्या यह दर्शाती है कि एक चोर भी मानता था कि यीशु का मूल्य उससे कहीं अधिक था जो उसे दिया गया।

3. यीशु का मूल्य आपके लिए क्या है?

यह सवाल हम सभी के सामने आता है:
आपके जीवन में यीशु का मूल्य क्या है?

यीशु ने एक बार पूछा:

मरकुस 8:36
“एक मनुष्य को क्या लाभ होगा यदि वह पूरी दुनिया जीत ले और अपनी आत्मा को खो दे?”

दुनिया अक्सर सफलता, धन या सुख के आधार पर मूल्य मापती है। लेकिन यीशु हमें याद दिलाते हैं कि इन सबकी तुलना आत्मा के मूल्य और उन्हें जानने तथा उनके मार्ग पर चलने से नहीं की जा सकती।

पौलुस ने इसे अच्छी तरह समझा:

फिलिप्पियों 3:8
“सचमुच, मैं सब कुछ हानि समझता हूँ क्योंकि मेरे प्रभु यीशु मसीह को जानने का मूल्य सब कुछ से बढ़कर है।”

पौलुस ने हर सांसारिक लाभ को कचरा माना, केवल मसीह को जानने के मूल्य की तुलना में।

4. पश्चाताप का निमंत्रण

यदि यहूदा, एक पापी, बहुत देर से ही सही, यीशु के मूल्य को समझ पाया, तो हम—जो सुसमाचार सुन चुके हैं—कितनी जल्दी प्रतिक्रिया करें जब अभी समय है?

अब देर न करें—यीशु मसीह का मूल्य पहचानें।
पश्चाताप करें। उनसे लौटें।
यीशु किसी भी चीज़ से अधिक मूल्यवान हैं जो यह संसार दे सकता है। उन्होंने आपकी आत्मा के लिए अपना जीवन दिया—उनका मूल्य अनमोल है।

प्रभु आपको आशीर्वाद दें और आपके आंखें यीशु के अतुलनीय मूल्य को देखने के लिए खोलें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp